श्लोक: स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥1॥
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥2॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥3॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ॥4॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥5॥
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥6॥
नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा, भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति

विद्यार्थियो गोस्वामी तुलसीदास मे और दूसरे कवियों में यही अंतर है कि मंगलाचरण के प्रारम्भ मे इतना व्यापक दृष्टिकोण नहीं रखता। किसी भी ग्रन्थ के आधार रूप में अक्षरज्ञान ही है। अगर लिखनेवाले को किसी भी भाषा का अक्षरज्ञान नहीं हो तो यह कार्य असम्भव है। भले ही कबीरदास इसके अपवाद रूप मे है। तुलसीदासजी ने सबसे पहले वर्णों, अर्थों, रसों और छन्दों की वन्दना की है क्योंकि यह उनकी व्यापक दृष्टि की दूसरी पँक्ति में मंगलकर्ता वाणी की देवी माँ सरस्वती की और प्रथम पूज्य गणेश की वन्दना करते हैं जिनकी कृपा भी आवश्यक है कोई शुभ कार्य करने हेतु।

भवानी शंकर की गोस्वामी जी श्री भवानी और महादेव शिवशंकर की वन्दना करते हैं, इन्हें कवि श्रद्धा और विश्वास रूप में याद करते हैं और कहते हैं कि उनकी कृपा के बिना साधक अपने अंतःकरण में स्थित ईश्वर को न देख पाते हैं न ही पहचान पाते हैं। कवि शिव को ज्ञान स्वरूप मानते हैं, उन्हें ही वे नित्य और निरंतर मानते हैं तथा वे बताते हैं कि वे अपने आश्रितों पर हमेशा कृपा करने वाले हैं क्योंकि उनका आश्रय पाने वाला टेढ़ा चन्द्रमा भी वन्दना के योग्य हो गया है।

कवि अगली पंक्ति में यह बताते हैं कि श्री सीताराम के गुणसमूह रूप वन में विहार करने वाले अर्थात उनके गुणों का बखान करने वाले कवीश्वर आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जी की वे वन्दना करते हैं और साथ ही कपीश्वर यानि रामभक्त हनुमान की भी वे वन्दना करते हैं। उनकी कृपा के वे आकांक्षी हैं। गोस्वामी जी बताते हैं कि जो देवी संसार की उत्पत्ति करने वाली हैं, पालनकर्ता हैं, अर्थात यथा स्थिति बनाये रखनेवाली तथा सारे क्लेशों

4

जो हरते हैं तथा कल्याण करते रहते हैं।
जो श्री रामचन्द्र की प्रियतमा जनकनन्दिनी सीताजी
हैं उनकी कृपा की जो स्वातन्त्र्य महत्ता है उन्हें भी
मैं नमस्कार करता हूँ, वन्दना करता हूँ। वन्दना
अन्तर्गत मंगलाचरण जो कि कार्यसमाप्ति की पूर्णता हेतु
सारे कवि करते हैं क्योंकि आपलोगों ने सुना होगा
कि ईश्वर की कृपा के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होता
यह भी देखा होगा कि प्रेमचन्द का 'मंगलसूत्र' उपन्यास
और जयशंकर प्रसाद का उपन्यास 'इरावती'
अपूर्ण रह गया था क्योंकि उसकी पूर्णता के पहले
ही इन महापुरुषों का देहावसान हो गया था।
इसीलिए गोस्वामी जी जो 'रामचरित मानस' सदृश

एक महान ग्रंथ की रचना करने जा रहे थे जो
उन्हें अमरता प्रदान करने वाला था इसलिए
मंगलाचरण की अंतिम पंक्तियों में विष्णु के
20 अवतार श्री रामचन्द्र की वन्दना करते हैं।
गोस्वामी जी कहते है कि मैं तो राम अर्थात हरि विष्णु

और जिनकी माया के वशीभूत हो सम्पूर्ण विश्व ब्रह्मा
इनमें ब्रह्मा, देवता और असुर भी जिनकी
असत्य संसार को सत्य मानने लगते हैं। ऐसे श्रीहरि
विष्णु अर्थात राम अर्थात सभी कारणों के कारण
श्रीराम की वे पुनः पुनः वन्दना करते हैं, आराधना
करते हैं।

यहाँ तक मंगलाचरण का भाग था और
अगली पंक्तियों में वे बताते हैं कि वे जो लिखने जा
रहे हैं, जिस कथा का बखान करने जा रहे हैं
वह कोई काल्पनिक कथा नहीं है इसका वर्णन विभिन्न
पुराणों, वेदों और पौराणिक ग्रंथों में पहले भी
हो चुका है। जो महर्षि वाल्मीकि के 'रामायण' में वर्णित
है उसे तो वे आधार मान ही रहे हैं लेकिन वे
अपनी प्रज्ञा से उत्पन्न ज्ञान भी, जो कुछ इतर
भी हैं वह लिखने जा रहे हैं। यहाँ वे यह भी कहते हैं,
वे इस काव्य की रचना स्वान्तः सुखाय अर्थात
अंतः करण के सुख के लिए वे अत्यंत मनोहर

6

भाषा अवधी में श्री राम की कथा कह रहे हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गोस्वामी जी ने यहाँ तथा सारे खण्डों (काण्ड) के प्रारम्भ में देवभाषा संस्कृत में अपनी बातों को प्रारम्भ किया है। इन संस्कृत श्लोकों में भी यत्र-तत्र सौंदर्य बिखरा हुआ है। 'भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ' पंक्ति में रूपक अलंकार है।

इति शुभम्

कुमार रजनीकान्त रंजन
[illegible]